

लक्ष्मी चालीसा

दोहा

मातु लक्ष्मी करि कृपा, करो हृदय में वास।
मनोकामना सिद्ध करि, पुरवहु मेरी आस॥

सोरठा

यही मोर अरदास, हाथ जोड़ विनती करूँ।
सब विधि करौ सुवास, जय जननि जगदंबिका॥

चौपाई 1

सिन्धु सुता मैं सुमिरौं तोही।
ज्ञान बुद्धि विद्या दो मोही॥

चौपाई 2

तुम समान नहिं कोई उपकारी।
सब विधि पुरवहु आस हमारी॥

चौपाई 3

जय जय जगत जननि जगदम्बा।
सबकी तुम ही हो अवलम्बा॥

चौपाई 4

तुम ही हो सब घट घट वासी।
विनती यही हमारी खासी॥

चौपाई 5

जगजननी जय सिन्धु कुमारी।
दीनन की तुम हो हितकारी॥

चौपाई 6

विनवौं नित्य तुमहिं महारानी।
कृपा करौ जग जननि भवानी॥

चौपाई 7

केहि विधि स्तुति करौं तिहारी।
सुधि लीजै अपराध बिसारी॥

चौपाई 8

कृपा दृष्टि चितवो मम ओरी।
जगजननी विनती सुन मोरी॥

चौपाई 9

ज्ञान बुद्धि जय सुख की दाता।
संकट हरो हमारी माता॥

चौपाई 10

क्षीरसिन्धु जब विष्णु मथायो।
चौदह रत्न सिन्धु में पायो॥

चौपाई 11

चौदह रत्न में तुम सुखरासी।
सेवा कियो प्रभु बनि दासी॥

चौपाई 12

जब जब जन्म जहाँ प्रभु लीन्हा।
रूप बदल तहाँ सेवा कीन्हा॥

चौपाई 13

स्वयं विष्णु जब नर तनु धारा।
लीन्हेउ अवधपुरी अवतारा॥

चौपाई 14

तब तुम प्रगट जनकपुर माहीं।
सेवा कियो हृदय पुलकाहीं॥

चौपाई 15

अपनायो तोहि अन्तर्यामी।
विश्व विदित त्रिभुवन की स्वामी॥

चौपाई 16

तुम सम प्रबल शक्ति नहिं आनी।
कहँ लौं महिमा कहौं बखानी॥

चौपाई 17

मन क्रम वचन करै सेवकाई।
मन इच्छित वांछित फल पाई॥

चौपाई 18

तजि छल कपट और चतुराई।
पूजहिं विविध भाँति मन लाई॥

चौपाई 19

और हाल मैं कहौं बुझाई।
जो यह पाठ करै मन लाई॥

चौपाई 20

ताको कोई कष्ट न होई।
मन इच्छित पावै फल सोई॥

चौपाई 21

त्राहि त्राहि जय दुःख निवारिणि।
त्रिविध ताप भव बंधन हारिणी॥

चौपाई 22

जो यह चालीसा पढ़ै पढ़ावै।
ध्यान लगाकर सुनै सुनावै॥

चौपाई 23

ताकौ कोई न रोग सतावै।
पुत्र आदि धन सम्पत्ति पावै॥

चौपाई 24

पुत्रहीन अरु सम्पत्ति हीना।
अन्ध बधिर कोढ़ी अति दीना॥

चौपाई 25

विप्र बोलाय के पाठ करावै।
शंका दिल में कभी न लावै॥

चौपाई 26

पाठ करावै दिन चालीसा।
ता पर कृपा करै गौरीसा॥

चौपाई 27

सुख सम्पत्ति बहुत सी पावै।
कमी नहीं काहू की आवै॥

चौपाई 28

बारह मास करै जो पूजा।
तेहि सम धन्य और नहीं दूजा॥

चौपाई 29

प्रतिदिन पाठ करै मन माहीं।
उन सम कोई जग में कहूँ नाहीं॥

चौपाई 30

बहुविधि क्या मैं करौं बड़ाई।
लेय परीक्षा ध्यान लगाई॥

चौपाई 31

करि विश्वास करै व्रत नेमा।
होय सिद्ध उपजै उर प्रेमा॥

चौपाई 32

जय जय जय लक्ष्मी भवानी।
सब में व्यापित हो गुण खानी॥

चौपाई 33

तुम्हरो तेज प्रबल जग माहीं।
तुम सम कोउ दयालु कहूँ नाहीं॥

चौपाई 34

मोहि अनाथ की सुधि अब लीजै।
संकट काटि भक्ति मोहि दीजै॥

चौपाई 35

भूल चूक करि क्षमा हमारी।
दर्शन दीजै दशा निहारी॥

चौपाई 36

बिन दर्शन व्याकुल अधिकारी।
तुमहि अछत दुःख सहते भारी॥

चौपाई 37

नहिं मोहिं ज्ञान बुद्धि है तन में।
सब जानत हो अपने मन में॥

चौपाई 38

रूप चतुर्भुज करके धारण।
कष्ट मोर अब करहु निवारण॥

चौपाई 39

केहि प्रकार मैं करौं बड़ाई।
ज्ञान बुद्धि मोहि नहिं अधिकाई॥

समापन दोहा 1

त्राहि त्राहि दुख हारिणी, हरो बेगि सब त्रास।
जयति जयति जय लक्ष्मी, करो शत्रु को नाश॥

समापन दोहा 2

रामदास धरि ध्यान नित, विनय करत कर जोर।
मातु लक्ष्मी दास पर, करहु दया की कोर॥